M.A - III SEMESTER PAPER-10 01

57

शौरसेनी प्राकृत साहित्य

इकाई - 3. समयसार - आचार्य कुन्दकुन्द (प्रथम अधिकार)

Q-1) समयसार आचार्य कुन्दकुन्द प्रथम अधिकार का संक्षेप में विवेचन करें।

Ans - शौरसेनी प्राकृत साहित्य में रचित समयसार एक सर्वोत्कृष्ट आध्यात्मिक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में रचयिता आचार्य कुन्दकुन्द जी है। आचार्य ने आध्यात्मिक दृष्टि से इस ग्रन्थ में "समय" शब्द के दो अर्थ बतलाया है - समस्त पदार्थ और आत्मा उन्होंने कहा है कि जिस ग्रन्थ पदार्थ अथवा आत्मा का सा वर्णित हो वह समयसार है। यह ग्रन्थ दस अधिकारों में विभक्त है, जिसमें जीव, आत्मा, कर्म-पुनर्जन्म, मोक्ष आदि का वर्णन सम्यक् रूप से किया गया है। इस ग्रन्थ में आचार्य अमृतचन्द्र के टीकानुसार 415 गाथाएँ और जयसेनाचार्य की टीका के अनुसार 439 गाथाएँ है।

आचार्य अमृतचन्द्र ने कुन्दकुन्द कृत उक्त समयसार की गुण-गरिमा का वर्णन करते हुए इसे विश्व का असाधारण अक्षय नेत्र कहा है। इस ग्रन्थ को अनेक आचार्यों ने इसे परमागमों का सार कहा है। समयसार जैन अध्यात्म तथा जैनधर्म-दर्शन की महिमा का स्थायी कीर्तिस्तम्भ, मोक्षमार्ग का अखण्ड दीप, मुमुक्षुओं के लिए कामधेनु तथा सभी के लिए एक वरद कल्पवृक्ष के समान माना गया है।

प्रथम जीवाजीवाधिकार → स्वसमय, परसमय, शुद्धनय आत्मभावना और सम्यक्त्व का प्ररूपण है। जीव को काम, भोग विषयक बन्ध कथा ही सुलभ है

किन्तु आत्मा का एकत्व दुर्लभ है। एकत्व विभक्त आत्मा को निजानुभूति द्वारा ही जाना जाता है। जीव प्रमत्त-अप्रमत्त दोनों दशाओं से पृथक ज्ञायक भाव मात्र है। ज्ञानी के दर्शन-ज्ञान-चरित्र व्यवहार से कहे जाते है, निश्चय से नहीं। निश्चय से ज्ञानी एक शुद्ध ज्ञायक मात्र ही है।

कुन्द कुन्दआचार्य ने कहा है कि जिसमें चेतन है वही जीव है। जीव-चेतन प्राणी है और निर्मल आत्मतत्व के ध्यान से मोक्ष सुख की प्राप्ति करना चाहता है संसार के क्षणिक तथा अस्वभाविक सुख भोगों में लिप्त रहने के कारण व्यक्ति अज्ञानतावश उसे ही सच्चा सुख मानने लगता है और नैतिक मार्ग को छोड़कर समाज और राष्ट्र को पतन के गर्त की ओर ले जाता है।

आचार्य कुन्द स्वामी ने ऐसे अज्ञानियों को प्रबोधित करते हुए कहते है कि यह कैसी विडम्बना है कि कर्ममलिप्त आत्मा अन्य अनात्म पदार्थों की ओर दौड़-धूप करने के वैभाविक कार्य को तो स्वभाविक मानती है और नैतिक साधना के सच्चे मार्गरूप आत्म-स्वरूप की उपलब्धि को बोझ मानकर वह उसकी उपेक्षा करती है।

काम, भोग और बन्ध की कथाएँ सभी जीवों को श्रुत है, परिचित है और अनुभूत है परन्तु पर पदार्थों से पृथक एकत्व की प्राप्ति सुलभ नहीं है।

कहने का भाव यह है कि यह जीव काम, भोग और बन्ध सम्बन्धी चर्चा अनादि काल से सुनता चला आ रहा है। अनादि से उसका परिचय प्राप्त कर रहा है और अनादि से ही उसका अनुभव करता चला आ

Scanned with CamScanner

रहा है। इसलिए उसकी सहसा प्रतीति हो जाती है परन्तु यह जीव संसार के समस्त पदार्थों से जुदा है और अपने गुण-पर्याय के साथ एकता को प्राप्त हो रहा है। इस संसारी जीव संसार के क्षणिक भौतिक सुखों में आकृष्ट हुवे है। व्यापारिक कार्यों के लिए हमलोग प्रातः काल से शीघ्र ही उठ जाते है और देर रात में सोते हैं। इस प्रकार हम अपनी शक्ति को क्षीण करते है। हमें स्वा- आत्मिक गुणों की प्राप्ति की चिन्ता नहीं है, यद्यपि वह हमारी स्वयं की वस्तु है। हमने अपने हृदय को व्यर्थ की वस्तुओं में फंसा रखा है वह तो वास्तव में मलिन परदान है। जिसकी ओर अज्ञानतावश दौड़ते रहते हैं।

यह शौरसेनी साहित्य आत्मगुणों के क्रमिक विकास के उपायों का साहित्य ग्रन्थ है। इसमें सभी संसारी जीव को मोक्ष प्राप्ति का उपाय सूक्ष्म रूप से किया गया है। साथ ही इसमें अध्यात्मक एवं दार्शनिक विचारधारा का सूक्ष्मातिसूक्ष्म का ~~विश्लेषण~~ विश्लेषण मिलता है।

अतः शुद्ध आत्मा का इतना सुन्दर और व्यवस्थित जीव का विवेचन प्रथम अधिकार में आचार्य कुन्द-कुन्द के मंगलचरण से उत्तम माना गया है।